आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :– कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:–प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

● वर्ष - 10 ● अंक-2721 ● उदयपुर, मंगलवार 07 जून, 2022 ● प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन ● कुल पृष्ठ : 4 ● मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

शेगांव जिला बुलढ़ाणा (महाराष्ट्र) में नारायण सेवा

नारायण सेवा संस्थान का ध्येय है कि दिव्यांग भी दौड़ेगा–अपनी लाठी छोड़ेगा। इस क्रम में संस्थान की शाखाओं व दानदाताओं के सहयोग से दिव्यांग जाँच, उनका ऑपरेशन के लिये चयन तथा कृत्रिम अंगों का माप लेना व अंग लगाने का कार्य गति पर है। ऐसा ही एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 29 व 30 मई 2022 को माहेश्वरी भवन, शेगांव में हुआ। शिविर सहयोगकर्ता रोटरी क्लब, भोगांव (महाराश्ट्र) रहे। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 171, कृत्रिम अंग वितरण माप 142, कैलीपर माप 29 की सेवा हुई।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमान् ज्ञानेश्वर जी पाटील (माऊली संस्था, अध्यक्ष), विशिष्ट अतिथि श्रीमान् विजय जी यादव साहब (उद्योगपति), श्रीमान् नंदलाल जी मूंदड़ा (शाखा संयोजक शेगांव शाखा), श्रीमान् सी.ए. आशीश जी (रोटरी अध्यक्ष), श्रीमान् दिलीप जी भूतड़ा (प्रोजेक्ट मेनेजर, रोटरी), अध्यक्ष श्रीमान् रमेश जी काश्वानी (उद्योगपति) रहे। नेहांशा जी मेहता (पी.एन.डो.), भंवरसिंह जी चौहान, लोकेन्द्रसिंह जी (टेक्नीशियन) सहित शिविर टीम में मुकेश कुमार भार्मा (शिविर प्रभारी), सुनिल जी (उपप्रभारी), हरीश सिंह जी रावत, कपिल जी व्यास (सहायक) ने भी सेवायें दी।

होशंगाबाद (मध्यप्रदेश) में दिव्यांग सेवा

नारायण सेवा संस्थान वर्शो से आपके आशीर्वाद से दिव्यांगजन सेवा में रत है। पूरे देश में स्थान–स्थान पर जाकर इसकी शाखाओं द्वारा दिव्यांगजन सहायता शिविर आयोजित किये जा रहे हैं। इस पुण्य कार्य को गति देने के लिये एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 29 व 30 मई 2022 को अग्निहोत्री गार्डन, होशंगाबाद में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्ता लांयस क्लब ग्वालियर आस्था रहे। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 145, कृत्रिम अंग वितरण 135, कैलिपर वितरण 32 की सेवा हुई।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमान् प. श्री सोमेश जी परसाई (भागवताचार्य) अध्यक्षता श्रीमान् समर सिंह जी (धनलक्ष्मी मचेन्टडाइज, प्रबन्धक), विशिष्ट अतिथि श्रीमान विपिन जी जैन (सचिव, रोटरी क्लब), श्रीमान् आशिश जी अग्रवाल (कार्यक्रम संयोजक), श्रीमान् प्रदीप जी गिल्ला (रोटरी क्लब, अध्यक्ष), श्रीमान् शील जी सोनी (रोटरी क्लब, संरक्षक), श्रीमान् राजीव जी जैन, श्रीमान् समीर जी हरडे (रोटरी क्लब सदस्य) रहे। डा.सिद्धार्थ जी लाम्बा (ऑर्थोपेडिक सर्जन), श्री रामनाथ जी ठाकुर (पी.एन. डो.), श्री किशन जी सुथार (टेक्नीशियन) सहित शिविर टीम में श्री हरिप्रसाद जी (शिविर प्रभारी), श्री गोपाल जी गोस्वामी, श्री हरीश सिंह जी रावत (सहायक) ने भी सेवायें दी।

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

विशाल निःशुल्क दिव्यांग जांच,
ऑपरेशन चयन एवं
कृत्रिम अंग (हाथ-पांव) माप शिविर

दिनांक : 12 जून, 2022

▪ माता बाला सुन्दरी प्रांगण, शहजादपुर, अम्बाला, हरियाणा

▪ श्री एसएस जैन संघ मार्केट, बल्लारी, कर्नाटक

इस दिव्यांग भाग्योदय शिविर में आपश्री सादर आमत्रित है एवं अपने क्षेत्र में जो दिव्यांग भाई बहन है उन तक अधिक से अधिक सूचना देवें।

पू. कैलाश जी 'मानव'
संस्थापक चेयरमैन,नारायण सेवा संस्थान

'सेवक' प्रशान्त भैया
अध्यक्ष, नारायण सेवा संस्थान

+91 7023509999
+91 2946622222
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

1,00,000 We Need You !
से अधिक सहयोग देकर, दिव्यांगों के सपनों को करें साकार
अपने शुभ नाम या प्रियजन की स्मृति में करायें निर्माण

मानवता के मन्दिर में बनेंगे कई वार्ड-सेवा कक्ष
* 450 बेड का निःशुल्क सेवा हॉस्पीटल * 7 मंजिला अतिआधुनिक सर्वसुविधायुक्त* निःशुल्क शल्य चिकित्सा, जांचें, ओपीडी * भारत की पहली निःशुल्क सेन्ट्रल फेब्रीकेशन यूनिट * प्रज्ञाचक्षु , विमंदित, मूकबधिर, अनाथ एवं निर्धन बच्चों को निःशुल्क आवासीय व्यावसायिक प्रशिक्षण

अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org
Cont. : 0294-6622222, +917023509999 (WhatsApp)

श्रीनगर (जम्मू-कश्मीर) में दिव्यांग सेवा

नारायण सेवा संस्थान ने दिव्यांगता –मुक्ति का यज्ञ वर्षो से प्रारंभ किया है। इस प्रयास–सेवा से 4,50,000 से अधिक दिव्यांग भाई–बहिनों को सकलांग होने का हौसला मिला है। लाखों दिव्यांगों को कृत्रिम अंग लगाकर जीवन की मुख्यधारा से जोड़ा गया है। इस पुण्य कार्य को गति देने के लिये एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 21 से 23 मई को 34 आसाम राईफल्स गुण्ड, गादंरबल में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्ता 34 आसाम राईफल्स, श्रीनगर रहे। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 157, कृत्रिम अंग माप 10, कैलिपर माप 90 की सेवा हुई तथा 34 का ऑपरेशन हेतु चयन किया गया।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्री कर्नल राजेन्द्र जी कराकोटी (कमाण्ड ऑफिसर, आसाम राईफल्स), अध्यक्षता मेजर अनुप जी (मेजर, आसाम राईफल्स), विशिष्ट अतिथि श्री प्रशान्त जी भैया (अध्यक्ष, नारायण सेवा संस्थान), श्रीमती वन्दना जी अग्रवाल (निदेशिका, नारायण सेवा संस्थान) रहे। डॉ. अंकित जी चौहान (ऑर्थोपेडिक सर्जन), डॉ.मानस रंजन जी साहू (पी. एन.डो.), श्री सु ील कुमार जी (टेक्निीशियन) सहित शिविर टीम में श्री लालसिंह जी भाटी (शिविर प्रभारी), श्री दिलीप सिंह जी चौहान (उप प्रभारी), श्री फतेह लाल जी (फोटोग्राफर), श्री मुकेश जी त्रिपाठी (सहप्रभारी), श्री बहादुर सिंह जी मीणा, श्री देवीलाल जी मीणा (सहायक) ने भी सेवायें दी।

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति

(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

प्रसन्नता है प्रेम का झरना : कैलाश मानव

चैनराजजी लौढ़ासाहब मिले जिन्होंने पहला हॉस्पीटल बना दिया। राजमलजी जैन साहब की कृपा हो गयी जिन्होंने मानवता का पाठ पढ़ा दिया। डिडवानिया साहब मिल गये। आप मिल गये। दानदाता मिल गये।

तो बहनों और भाईयों। कथा जो व्यथा मिटा दे। ये कथा, रावण का पुतला जो बार– बार हर साल जलाते हैं, हर साल जलाते हैं। द हरे पे जलाते हैं। अपने मन के रावण को जलाना है। अपने मन के छल– प्रपंच को, असत्य को, अभिमान को, घमण्ड को, क्रोध को, लोभ को, दंभ को। कहते हैं – पाप का बाप लाभ होता है। रावण ने भ्राुक और सारण को भी भेजा। जब विभीशण चला गया। दो गुप्तचर भेजे, तुम गुप्त रूप से पता लगाना। मेरा भाई मेरे बिना बहुत दुःखी हो जायेगा। सोचेगा –अरे में सोने की लंका छोड़कर आ गया। ये तो तपस्वी हैं इनके पास क्या मिलेगा ? लेकिन जब भ्राुक, सारण आये। भगवान राम के भक्त बनकर आये थे उन्होंने भी रावण को समझाया। राम भगवान हैं, लक्ष्मण भोशनाग के भोशाअवतार हैं। हे रावणजी हम भी आप से प्रार्थना करते हैं, आप अभी सीताजी को लौटा दीजिये। लेकिन अड़ गया जो अड़ गया। कहते हैं – अभिमानी दंभ नी छोड़ियो। आज री कथा लीला कथा। सीताजी तो अग्नि में प्रवे ा वेई ग्या था। ये माया रूपी सीताजी री कथा। आपणे हिकावा री कथा। आपणे विभीशण जसो भक्त बणनो, आपणे शुक ,सारण जसो भक्त वण नो।

आस की डोर विश्वास की ओर

नारायण सेवा संस्थान ने मेरी आस की डोर विश्वास की ओर मेरी बेटी को नई जिंदगी दी। चिकित्सकों और साधकों ने बहुत ध्यान दिया। परिणाम स्वरूप बेटी को नया जीवन मिल। मैं संस्थान का दिल से बहुत बहुत धन्यवाद करती हूँ। मैं कविता यादव उम्र 23 छत्तीसगढ मुंगेली की रहने वाली हूँ। मेरे पति दुर्गेश यादव दूसरों के खेत में मजदूरी करते हैं। मेरी लड़की गोमिया 3 जन्म से ही एक पैर में टेढ़ेपन से ग्रसित थी। गरीबी के कारण आर्थिक हालात बहुत खराब हैं। लड़की के पैर की परेशानी से सभी बहुत परेशान और निराश थे। उसका बिलासपुर, रायपुर, मुंगेली, कुँवरधर आदि कितनी ही जगहों पर इलाज करवाया। 1 से 2 लाख रुपयों का खर्चा भी हो गया पर कुछ फायदा नहीं हुआ। फिर एक दिन मेरी दीदी की भांजी ने नारायण सेवा संस्थान के बारे में बताया और आस्था चैनल के द्वारा पूरी जानकारी मिली। तब हम बच्ची को लेकर उदयपुर आये। संस्थान चिकित्सकों ने जाँच की फिर 2 मार्च 2022 को पहला ऑपरेशन कर प्लास्टर चढ़ाया गया। दूसरा ऑपरेशन 14 मार्च को हुआ और पैर में रिंग लगाई गई। इसके बाद घर लौट गए। एक माह बाद फिर आये और 19 अप्रैल 2022 को तीसरा ऑपरेशन हुआ। अब बच्ची के पांव की स्थिति में सुधार भी दिख रहा है। हड्ड़ी भी जुड़ रही है। संस्थान का दिल से आभार।

सम्पादकीय

आशा और हताशा दो भाव हैं जो व्यक्ति की सफलता व असफलता या सुख और दुःख का निर्धारण करते हैं। आज के वातावरण को हम देखें तो आशा, सफलता, सुख के बजाय व्यक्ति हताशा, असफलता व दुःख से त्रस्त है। हरेक व्यक्ति में सोचने की क्षमता होती ही है किन्तु मानव की कमजोरी है कि वह सबसे पहले नकारात्मक सोचता है। किसी को घर आने में देर हो जाये तो भी घर वालों की पहली सोच यही बनती है कि कहीं कोई दुर्घटना तो नहीं हो गई ? यही का यही भाव सब मामलों में उभरता है। वर्षों से हमारी सोच में हताशा ने घर कर लिया है, इसके कारण व्यक्ति प्रयास तो करता है पर जल्दी ही पस्त भी होने लगता है। आशा का संचरण कमजोर होने से निराशा का भाव जागृत होने लगता है तथा उसकी परिणति हताशा में होती है। इसलिये सफल जीवन के लिए हताशा के किनारा करके आशा में ही जीना चाहिये।

कुछ काव्यमय

आशा जब बलवती हो,
तो हताशा कैसे आयेगी ?
हताशा आते ही
संकल्पों की मंजिल खो जायेगी।
इसलिये आशा में ही जीयें।
आशा का अमृत पीयें।

अपनों से अपनी बात

दया भावना

देता है, लेता नहीं,
सच्चा स्नेही जान।
प्रेम नहीं सौदा करे,
यही धर्म का ज्ञान।।

आप धर्म के ज्ञान वाले हो, कभी दया रखते हो। विद्या ददाति विनयम् की पालना करते हो। इन दिव्यांगों को खड़ा कराते हो माताओं–बहिनों। इनके बारे में आपके मन में विचार चलता है और विचार फिर कर्म बनता है। देखिये चैनराज जी लोढ़ा साहब आपके हमारे जैसे एक इंसान थे। उनके मन में भावना आयी कि मैं आदिवासी क्षेत्र में कम्बल

वितरण करूँ। मैं इन लोगों के लिये भोजन बनाकर ले जाऊँ। मैं इन लोगों के बच्चों के लिये कपड़े ले जाऊँ और फिर धीरे – धीरे विचार आगे बढते – बढते हॉस्पीटल बनाने तक का महान् यज्ञ उनके द्वारा हो गया।

दया धर्मस्य मूलम्। उनके जीवन में दया धर्म का मूल शब्द प्रेक्टिकल लाना। हरकिशनदास हॉस्पिटल में जब एड़मीट हुये, तीसरा हार्टअटैक जरा जोरों से आ गया। ड़ॉक्टरों ने कहा कि इनका बचना अब असंभव की तरह है। कुछ क्षणों में ही पारब्रह्म परमात्मा ने चमत्कार किया कि जैसे कान्ति कथा को आप सुनते हैं, मनन करते हैं और कान्ति कथा के आधार पर अपने सद्कर्म करते है। भक्ति भाव के साथ में–

मुख में हो राम नाम,
राम सेवा हाथ में।
तूं अकेला नहीं प्यारे,
राम तेरे साथ में।।

तो उन पर जैसी कृपा हुई वह अद्भुत है।

–कैलाश 'मानव'

सोच का अन्तर

इंसान क्या नहीं कर सकता? अगर इंसान ठान ले तो वो जो चाहे, वो कर सकता है। संसार में इस बात के जीवन्त प्रमाण भरे हुए हैं। महात्मा गाँधी, स्वामी विवेकानन्द, डॉ. कलाम, सचिन तेंदुलकर, लता मंगेश्कर आदि वो शख्सियतें हैं, जिन्होंने अपनी सोच के दम पर साधारण मनुष्यों से अलग अपनी पहचान बनाई। ये भीड़ से अलग वो नायाब हीरे हैं, जिनकी सोच मुश्किलों में भी सकारात्मक बनी रही है। ये अपमान को भी एक चुनौती के रूप में स्वीकार करते हैं।

किसी आश्रम में एक संत और उनका शिष्य रहते थे। एक दिन गाँव के

किसी सेठ ने शिष्य को गाय दान दी। वह गाय लेकर आश्रम पहुँचा और अपने गुरु से कहा –गुरुदेव, गाँव के एक सेठ ने आज आश्रम के लिए एक गाय दान द है।

शिष्य की बात सुनकर संत ने प्रसन्नतापूर्वक उत्तर दिया–बहुत अच्छी बात है। अब प्रतिदिन आनन्दपूर्वक दूध पीयेंगे। शिष्य अत्यन्त प्रसन्न हो गया। अब प्रतिदिन गुरु–शिष्य गाय के दूध का आनन्द लेने लगे। कुछ दिन पश्चात् वह सेठ आश्रम आया और अपनी गाय वापस लेकर चला गया। इस बात पर शिष्य अत्यन्त दुःखी हो गया। वह सोचने लगा कि अब मुझे प्रतिदिन गाय का शुद्ध व ताजा दूध नहीं मिलेगा। गाय थी तो दूध का आनन्द था। अपने मन की व्यथा लेकर वह अपने गुरु के पास गया और कहा –गुरुवर, वह सेठ आज आश्रम आया और अपनी गाय वापस लेकर चला गया। अब हमें दूध कैसे मिलेगा?

शिष्य की बात सुनकर गुरु तनिक भी व्यथित और दुःखी नहीं हुए। उन्होंने शांत मन से सहजतापूर्वक अपने शिष्य से कहा–कोई बात नहीं। खुशी की बात है कि अब हमें गाय का गोबर नहीं उठाना पड़ेगा। गाय की साफ–सफाई इत्यादि की भी मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। वे संत अपने शिष्य की तरह गाय के चले जाने एवं दूध न मिलने से दुःखी नहीं हुए, बल्कि उन्होंने शिष्य के दूध नहीं मिलने की दुःख वाली बात में भी खुशी की किरण ढूँढ ली थी। यह होती है संतों की प्रवृत्ति।

इस प्रकार महापुरुष नकारात्मकता को नहीं देखते। वे अच्छाई वाला पक्ष देखते हैं। वे सिक्के के हैड वाले पहलू का ही विचार करते हैं, टैल का नहीं। ऐसे लोग अपनी सकारात्मक तरंगों से अपने प्रभाव क्षेत्र में आने वाले हर नकारात्मक व्यक्ति को भी सकारात्मक बना देते हैं। इनकी सकारात्मक सोच ही इन्हें असाधारण व्यक्तित्व का धनी बनाती है, जो कि साधारण मनुष्य में नहीं होती। साधारण मनुष्य और महापुरुष में बस सोच का ही अन्तर होता है।

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित-झीनी-झीनी रोशनी से)

कमला की बड़ी इच्छा थी कि यहां से 5–7 अनाथ बच्चों को उदयपुर ले जाकर उनका लालन–पालन व पढ़ाई लिखाई की जाये। जीप में जगह थी नहीं, यह भी प्रश्न था कि इन्हें ले जाकर रखा कहां जाये? कमला ने कहा–अब तो हमारे पास जमीन भी है। कैलाश ने कहा–जमीन होने से क्या होता है, उस पर कुछ निर्माण करने के लिये पैसे भी तो चाहियें। कमला बोली –जमीन खुद बुलायेगी दानदाताओं को और इस पर भवन बनेगा और आगे कुछ हो सकेगा। कैलाश ने मन ही मन कमला की इच्छाएं पूर्ण होने की कामना की। पानरवा से 4–5 अनाथ बच्चे किसी तरह जीप में बिठाकर उदयपुर ले आए। कमला उनकी प्राण–पण से सेवा करती। इस बीच से.4 में यू.आई.टी. से खरीदी जमीन पर तुलसी का एक पौधा लगा दिया और इसे सेवा धाम नाम दे दिया। अब रोज वहां जाकर गायत्री मंत्र का जाप करने लगे और जल छोड़ने लगे। इससे जमीन के प्रति अपनत्व की अनुभूति होने लगी।

कैलाश को एक विवाह समारोह में सम्मिलित होने अमृतसर जाना पड़ा। पीछे से कुछ यात्री उदयपुर घूमने आये। उन्होंने नारायण सेवा का नाम सुना था। प्रसिद्ध शल्य चिकित्सक डॉ. आर. के. अग्रवाल का नाम प्रारम्भ से ही नारायण सेवा से जुड़ा था। यात्रियों ने पूछताछ की तो उन्हें डॉ. अग्रवाल का नाम ही बताया। सभी डॉ. अग्रवाल के पास गये तो वे उन सब को लेकर कैलाश के घर पहुँचे। कैलाश की अनुपस्थिति में कमला ने ही उनका स्वागत किया। कुछ देर बातचीत के बाद कमला उन्हें सेवा धाम की जमीन पर ले गई और कहा कि अभी कुछ अनाथ बच्चे उसके घर पर ही रहते हैं, उनके लिये यहां एक कमरा बनवाने की इच्छा है, आप लोगों का योगदान मिल जाये तो इसकी नींव पड़ जायेगी। आगन्तुकों ने कहा कि इतना पैसा तो वे दे नहीं सकते – दो–चार हजार रु. जरूर दे सकते हैं। कमला ने कहा कि हमारी इच्छा तो और भी अनाथ बच्चों को लाकर यहां रखने की है इसलिये आप इस बारे में पुनर्विचार करना। कमला की बात को गंभीरता से लेते हुए उन्होंने कहा कि वे नाथद्वारा जा रहे हैं, वहां उनका 10 दिन रहने का कार्यक्रम है, इस बीच कैलाश अगर लौट आये तो उनसे कहना कि वो हमसे आकर मिल ले। कैलाश के लौटते ही कमला ने सारी बात बताई तो दोनों पति–पत्नी नाथद्वारा पहुँच गए।

अंश - 118

दिव्यांगों के सेवार्थ श्रीमद्भागवत कथा हुई

नारायण सेवा संस्थान द्वारा दीन–दुःखी दिव्यांगजनों के कल्याणार्थ श्रीमद्भागवत कथा सप्ताह का आयोजन गत मंगलवार को प्रेरणा सभागार, सेवामहातीर्थ बड़ी में संपन्न हुआ। संस्थान अध्यक्ष प्रशान्त जी अग्रवाल ने बताया कि भागवत कथा मर्मज्ञ कथाव्यास रमाकान्त जी महाराज के श्रीमुख से कथायज्ञ 31 मई से 6 जून तक प्रतिदिन 1 से 4 बजे तक चला। देशभर से इलाज के लिए आए दिव्यांग बन्धुओं और उनके परिजनों की उपस्थिति में यह कथा सम्पन्न हुई। स्थानीय लोगों को बुलाने के कारण उन्होंने कहा कि अधिक से अधिक संख्या में पधाकर भगवद् आयोजन को सफल बनाया।

मंकीपॉक्स में चेचक जैसे लक्षण, डरने जैसी बात नहीं

मंकीपॉक्स एक ऐसी बीमारी है जो दशकों से अफ्रीकी लोगों में आम है, लेकिन अब यह अन्य देशों में भी फैल रही है। अमरिका, कनाड़ा सहित अब तक 11 देशों में इसके लगभग 80 मामले पाए जा चुके हैं। हालांकि भारत में अभी तक ऐसा कोई नहीं आया है। अतः इससे डरें नहीं।

इस रोग को चेचक से जुड़ा हुआ ही माना जा रहा है। हालांकि दक्षिण अफ्रिका में यह बीमारी आम है, लेकिन इसका दूसरे देशों में प्रसार चिंता की स्थिति पैदा कर रहा है। ऐसे में स्वच्छता व इम्युनिटी बढ़ाने पर ध्यान दें।

क्या हैं मंकीपॉक्स

यह चेचक के समान एक दुर्लभ वायरस संक्रमण है। यह पहली बार 1958 में शोध के लिए रखें बंदरों में पाया गया था। इससे संक्रमण का यह पहला मामला 1970 के सामने आया था। यह रोग मुख्य रूप से मध्य और पश्चिम अफ्रिका के वर्षावन क्षेत्रों में होता है।

ये है इसके लक्षण

डब्ल्यूएचओ के अनुसार, यह आमतौर पर बुखार, दाने और गांठ के जरिए उभरता है और इससे कई चिकित्सा जटिलताएं पैदा हो सकती हैं। रोग के लक्षण दो से चार सप्ताह तक दिखते हैं, जो अपने आप दूर होते जाते हैं।

गंभीरता को समझें

इसे लेकर कुछ भी कहना अभी जल्दबाजी होगी। हाल के समय में इससे मृत्यु दर का अनुपात लगभग 3–6 प्रतिशत रहा है लेकिन यह 10 प्रतिशत तक हो सकता है। वर्तमान प्रसार के दौरान मौत का कोई मामला सामने नहीं आया है।

इस तरह फैलता है

मंकीपॉक्स किसी संक्रमित व्यक्ति या जानवर के निकट संपर्क के माध्यम से या वायरस से दूषित सामग्री के माध्यम से मनुष्यों में फैलता है। माना जाता है कि यह चूहों, गिलहरियों आदि से फैलता है। हालिया दौर में इसके बंदरों से फैलने की आंशका है।

प्रसार के ये तरीके भी

मंकीपॉक्स एक संक्रमण के रूप में घावों, शरीर के तरल पदार्थो, श्वसन के साथ बाहर आने वाली बूंदों और दूषित सामग्री जैसे बिस्तर आदि के माध्यम से फैलता है।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

अनुभव अमृतम्

प्रभु ने पीर हरण कर ली। अनित्य है शरीर का स्वभाव। इस शरीर में जो हलचल हो रही है। देह धारा से जो भोजन किया गया है उसके जो परमाणु बने हैं एवं जो विचार धारा जीवन में साथ साथ चलती रहती है। कभी भूतकाल, कभी भविष्य काल, वर्तमान में तो कम रहती है, कितना कोलाहल है? कितने विचार? एक विचार आता है, दूसरा विचार आता है, तीसरा विचार आता है।

एक पुराने कर्मों के फल पकने की धारा, आपसे न सुना होगा हिमालय में ऐसे भी पौधे है जहाँ किसी पौधे में 12 साल में एक बार फल आता है। पुष्प भी आता है खिलता रहता है। 12 साल में एक बार आता है। एक बार आ गया पुष्प फल उसके बाद अगले 12 साल बाद क्या प्रकृति की कृपा है। पौधा एक ही है, डाली एक ही है, हरे–हरे पत्ते है, उस तरह के पौधे और भी बहुत है। जहाँ रोज फूल आ रहे हैं। साल में 3 महीने आ रहे हैं। लेकिन ये पौधा अदभुत। वैसे ही हमारे कर्मों के फल कब आएंगे। ये निश्चित नहीं है। हमें तो विदित नहीं है। कर्मणा गति गहना। जब कर्म की बात करते हैं तो रामचरित मानस का कर्म प्रधान विश्व रचि राखा, जो जस कर ही सो तस फल चाखा। लेकिन वो फल कब पकेंगे? यह हमें मालूम नहीं फल पकना तो पड़ेगा। जैसा कर्म करेंगे उसका फल पकना तो पड़ेगा। बीज है तो परिणाम है परिणाम है, बीज है, बीज है तो फल है, फल है तो बीज है।

क्रम चलता ही रहता है निरंतर। चलता ही रहता है। इसीलिए इसी क्षण से आज से कर्म करने में सजगता रखें। मैं गलत काम नहीं करूंगा। मैं गलत भाव नहीं लाऊंगा। मैं गलत बोली नहीं बोलूंगा। मैं गलत कर्म नहीं करूंगा। कर्म फल पकने की धारा, ऋतु फल पकने की धारा, मौसम के परिवर्तन से शरीर का पोर पोर ग्रहण कर रहा है। तापक्रम के साथ में इस सृष्टि की कई वस्तुएं सुक्ष्म रूप से प्रवेश कर रही है। तत्व तो पांच ही है। कभी भोजन ज्यादा मिर्ची का कर लिया, जलन अग्नि तत्व। कभी कर्म फल पकने की विचार धाराएं या देह धाराएं यह ऋतु धारा की वजह से हलचन होने लगी। गैस बनने लगी। वायु धारा वायु तत्त्व। कभी आलस्य खूब होने लगा पृथ्वी तत्व और पूरे देह देवालय में 70 प्रतिशत जल तो है ही है। प्रत्येक अंग में जल है, जल के प्रभाव से ही रूधिर बना है।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 471 (कैलाश 'मानव')

आपश्री का सहयोग मिले : प्रार्थना

भारत के विभिन्न शहरों में 720 स्नेह मिलन
2026 के अंत तक 720 मिलन समारोह आयोजित करने का संकल्प

960 शिविरों द्वारा निःशुल्क जांच एवं उपचार
2026 के अंत तक 960 आर्टिफिशियल लिम्ब केम्प लगाये जायेंगे।

1200 नई शाखाएं
2026 के अंत तक 1200 नई शाखाएं खोलने का लक्ष्य।

120 कथाएं
2026 के अंत तक विभिन्न शहरों में 120 कथाएं आयोजित की जायेंगी।

वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी
2026 के अंत तक वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी का निर्माण पूर्ण होकर 10 हजार से अधिक लोग लाभान्वित होंगे।

नारायण सेवा केन्द्र
आगामी 5 वर्षों में संस्थान के वर्तमान में संचालित सभी केन्द्रों में रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण आरम्भ किये जायेंगे।

विदेश में सेवा प्रकल्पों का विस्तार

26 देशों में पंजीयन
वर्ष 2026 के अंत तक 26 देशों में संस्थान के पंजीकृत कार्यालय खोलने का लक्ष्य

6 से सेवा केन्द्र का शुभारम्भ
6 से अधिक देशों में केन्द्र स्थापित कर संस्थान सेवाओं को देगा विस्तार

20 हजार दिव्यांगों को लाभ
विदेश के 20 हजार से अधिक जरूरतमंद एवं रोगियों को लाभान्वित करने का होगा प्रयास

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. +91-294-6622222,+91-7023509999 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023